जब वस्तुएं दरारों में से गिरती हैं (6:1-3)

मैं इस बात की कल्पना कर सकता हूं कि कलीसिया का प्रत्येक कार्यक्रम एक मेज़ की ऊपरी सतह की तरह है। काश मेज़ की यह ऊपरी सतह समतल व सज़्पूर्ण चमकदार होती। सच तो यह है कि, यह ऊंची - नीची और ऊबड़ - खाबड़ (अर्थात कहीं से बहुत ऊंची और कहीं से बहुत ही नीची)है। इससे भी बड़ी बात यह है कि इसमें बहुत सी *दरारें* हैं। कुछ दरारें बहुत ही बड़ी हैं, कुछ छोटी, कुछ लज़्बी तो कुछ बारीक ... परन्तु हैं बहुत सी ... और इन दरारों के बीच से अक्सर वस्तुएं गिरती रहती हैं।[1] कई बार मुझे ऐसा लगता है कि इस समस्या का समाधान कर लिया गया है, जबकि बाद में (मुझे कुछ परेशानी हुई) पता चला कि ऐसा नहीं था।[2]

जब *लोग* दरारों में से गिरने लगते हैं तो यह एक अधिक चिन्ता का विषय बन जाता है। आम तौर पर कलीसियाओं के सदस्यों की भी आवश्यकताएं होती हैं जिनके बारे में हमें पता नहीं चलता या हम तत्काल उनकी ओर ध्यान नहीं देते। परिणामस्वरूप, भावनाएं आहत हो सकती हैं। लोग कई बार कलीसिया को छोड़ जाते हैं अर्थात वे दरारों में से गिर जाते हैं। शायद ये सदस्य इकट्ठा होना छोड़ देते हैं (इब्रानियों 10:25), और हम इस पर ध्यान नहीं देते, देते भी हैं, तो यह देखने की कोशिश नहीं करते कि कहीं कोई मुश्किल तो नहीं है। आमतौर पर जब तक हम इसके बारे में जानने के लिए कुछ करते हैं, तब तक उनकी आत्मिकता इतनी गिर चुकी होती है कि इन सदस्यों को वापस लाना कठिन हो जाता है। ये बहुमूल्य आत्माएं दरारों में से गिर जाती हैं।

लोग दरारों में से अक्सर गिर जाते हैं; यह जीवन का एक सत्य है। परन्तु जो प्रश्न इस समय हमारे सामने है, वह यह है कि ''जब लोग दरारों में से गिर जाएं तो हमें क्या *करना* चाहिए?'' प्रेरितों 6:1-7 में परमेश्वर इस प्रश्न का उत्तर देता है।

आरंभिक कलीसिया में लोग दरारों में से गिर गए (6:1)

''उन दिनों में, जब चेले बहुत होते जाते थे, तो यूनानी भाषा बोलने वाले इब्रानियों पर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती'' (6:1)। ''उन दिनों में'' शब्द इस आयत को पिछले अध्याय से जोड़ देते हैं: ''और प्रतिदिन मन्दिर में और घर-घर में उपदेश करने; और इस बात का सुसमाचार सुनाने से कि यीशु ही मसीह है, न रुके'' (5:42)। प्रेरितों की शिक्षा और प्रचार के कारण ''चेले बहुत होते जाते थे।''

हम उस समय के निकट आ रहे हैं जब यरूशलेम में मसीही लोग तितर-बितर हो गए थे (8:1-4)। कई लोगों का विचार है कि कलीसिया को स्थापित हुए अब तक तीन या चार वर्ष हो चुके थे जबकि कइयों का यह अनुमान है कि छह से आठ वर्ष हो चुके थे। अब तक कितने मसीही इसमें मिलाए जा चुके थे? यदि हम लूका की प्रतिदिन ''मिला देता'' था, की पारिभाषिक शब्दावली को अक्षरश: ही लें तो कुल जोड़ ''बढ़ता'' और अभी भी ''बढ़ता'' जा रहा होगा। उनकी संख्या अभी जी ''बढ़'' ही रही थी, यरूशलेम की कलीसिया में अब तक बीस या तीस हज़ार सदस्य हो चुके होंगे![3]

ये बीस से तीस हज़ार लोग केवल वे ही नहीं थे जिन्हें पानी में डुबोया गया था। यह आयत उन्हें ''चेले'' कहती है। बेशक यीशु के अनुयायियों के लिए इस शब्द का प्रयोग सुसमाचार के वृत्तांतों में बार-बार हुआ है परन्तु प्रेरितों के काम की पुस्तक में यह शब्द हमें पहली बार मिला है। ''चेले'' का अक्षरश: अर्थ है ''सीखने वाला।''[4] ग्रेट कमीशन में यीशु ने अपने अनुयायियों को चुनौती दी थी: ''इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को *चेला बनाओ* और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो'' (मत्ती 28:19)। प्रेरित वैसे ही प्रचार कर रहे थे जैसे यीशु ने उन्हें बताया था (मरकुस 16:15)। परिणामस्वरूप, यीशु के चेलों की संख्या बढ़ती ही जा रही थी।

कई बार मैं प्रार्थना करता हूं और मैंने औरों को भी प्रार्थना करते सुना है कि स्थानीय मण्डली संख्या और आत्मिकता में उन्नति करे। यरूशलेम की कलीसिया दोनों में ही बढ़ रही थी! परन्तु क्या वह सञ्पूर्णता पाने में सफल हो सकी? कदापि नहीं: ''उन दिनों में *जब* चेले बहुत होते जाते थे, तो यूनानी भाषा बोलने बाले इब्रानियों पर कुड़कुड़ाने लगे ...'' (6:1)। जैसे असफल होने में परेशानी होती है, वैसे ही सफल होने पर भी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

शैतान ने पहले पतरस और यूहन्ना को गिरज़्तार करवाकर कलीसिया की उन्नति को बाहर से रोकने की कोशिश की, फिर उसने कलीसिया को भीतर से हनन्याह और सफ़ीरा द्वारा नाश करने का प्रत्यन किया। फिर उसने बाहर से कोशिश करके सभी प्रेरितों को गिरज़्तार करके कलीसिया को भीतर से तोड़ना चाहा था। इस बात पर ध्यान दें कि उसने मण्डली की दो क्षमताएं अर्थात इसके प्रभावशाली विकास और प्रत्येक सदस्य की प्रेमपूर्वक देखभाल बताई। (यदि शैतान आपकी दुर्बलताओं से आपका नाश न कर सके, तो वह आपकी क्षमताओं द्वारा आप पर आक्रमण करेगा।[5])

हमने देखा था कि यरूशलेम की कलीसिया कैसे अपने ज़रूरतमंद सदस्यों की देखभाल करती थी और हर कोई इसमें अपना योगदान देता था (2:44, 45; 4:32-35)। ज़रूरतमंद सदस्यों की सूची में विधवाओं का नाम ही सब से ऊपर होगा।[6] उन दिनों विधवा से बढ़कर और कोई भी निर्धन नहीं होता था, क्योंकि उसका तो रोटी कमाने वाला ही चला (मर) गया होता था। यदि उसके परिवार में कोई निकट सञ्बन्धी नहीं होता तब तो उसकी हालत और भी दयनीय हो जाती थी। आरज़्भिक कलीसिया की मुज़्य चिन्ता वयोवृद्ध विधवाओं के लिए होती थी, जिनकी आवश्यकताओं का ध्यान

रखने वाला कोई नहीं होता था (याकूब 1:27; 1 तीमुथियुस 5:3-16)।

प्रेरितों 6:1 में 2:45 की ''आवश्यकताओं को पूरा करना'' और 4:35 की ''जैसी जिसे आवश्यकता होती थी'' आवश्यकताएं पूरी करने वाली बात कुछ समझ में आती है। भोजन ''प्रतिदिन'' बांटा जाता था। ऐसा लगता है कि इसका आरम्भ प्रेरितों ने ही करवाया था[7] (ऐसा नहीं कि वे खाने का सामान पूरे यरूशलेम में बांटते होंगे, परन्तु लोगों तक पहुंचाया उन्होंने ही[8])। यह प्रबन्ध कुछ समय तक तो चलता रहा, परन्तु कलीसिया के बढ़ने पर यह प्रथा समाप्त हो गई और लोगों की उपेक्षा होने लगी।

मण्डली की दरारों में से गिरने वालों में यूनानी भाषा बोलने वाली विधवाएं ही थीं। मूल यूनानी भाषा बोलने वालों में इब्रानियों के विरुद्ध कुड़कुड़ाहट थी (नोट KJV), जिसका अर्थ यह हो सकता है कि अन्यजाति मसीहियों और यहूदी मसीहियों के बीच मतभेद पैदा हो गए थे। तथापि अन्यजातियों में से वहां अभी मसीही नहीं थे। ''यूनानी भाषा बोलने वाले'' यहूदी ही थे, जो अन्य देशों में तितर-बितर हो गए थे,[9] जिनकी मातृभाषा यूनानी (उस समय की विश्वव्यापी भाषा[10]) थी, और जिन्होंने अपने मेज़बान देशों की रीतियों को अपना लिया था।[11] दूसरी ओर, ''देशीय इब्रानी'' वे यहूदी थे जिनकी मातृभाषा अरामी (इब्रानी का रूपान्तरण)[12] थी और जो अपने पूर्वजों की रीतियों को मानने में गर्व महसूस करते थे। इनमें से अधिकतर फलस्तीन में रहते थे, और उनमें से अधिकतर यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों को घृणा की दृष्टि से देखते थे जिन्होंने (उनके विचार से) ''मूर्तिपूजकों के ढंग अपना लिए थे।''[13] यरूशलेम की कलीसिया में देशीय यहूदी और यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदी इकट्ठे हो गए थे।[14] यह सुसमाचार की ही सामर्थ थी कि वे अब तक एक चित्त और एक मन बने हुए थे (2:46; 4:32; 5:12)। परन्तु, यह शान्ति थोड़े ही समय की थी,[15] जो किसी भी समय भंग हो सकती थी।

अध्याय 6 में शैतान पूरे क्रोध में था और उसके क्रोध का ज्वालामुखी कभी भी फट सकता था: ''... वे कुड़कुड़ाने लगे ...।''[16] कुछ टीकाकारों का मत है कि यह उपेक्षा काल्पनिक ही थी और यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों के पास शिकायत का कोई कारण नहीं था। सम्भव है; कई बार लोग शिकायत के लिए मौका ही ढूंढते रहते हैं। परन्तु इन यहूदियों की शिकायत उचित थी, क्योंकि लूका ने यह कहने के बजाय कि ''उन्हें *लगा* कि हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती'' यह कहा कि ''हमारी विधवाओं की सुधि *नहीं ली जाती*।''

कुछ विद्वानों का मत है कि यह उपेक्षा जानबूझकर की गई थी। उनका तर्क है कि प्रेरित लोग देशीय यहूदी थे जिन्होंने यूनानी भाषा बोलने वालों के विरुद्ध पक्षपात किया। प्रेरितों ने उन्हीं लोगों को लिया होगा जिन्हें उन्होंने बांटने में सहायक जाना, इसलिए ये लोग भी देशीय यहूदी ही थे जिनके विचारों में वही पूर्वधारणा थी। स्पष्टतया, यह बात सत्य है कि बांटने के लिए प्रेरितों ने देशीय यहूदियों को ही लगाया क्योंकि शिकायत देशीय यहूदियों के विरुद्ध ही थी। परन्तु यह मानने का कोई कारण नहीं है कि उनकी विधवाओं की उपेक्षा जानबूझ कर की गई थी। हमारी नीयत बहुत सही होने *पर भी,* लोग दरारों में से गिर सकते हैं।

अच्छी अगुआई होते हुए भी, लोग दरारों में से गिर सकते हैं

आयत 1 में एक महत्वपूर्ण शिक्षा मिलती है। संसार में सबसे योग्य अगुआई होने पर भी, उपेक्षाएं हो ही जाती हैं। आत्मा से प्रेरणा पाए हुए प्रेरितों से अच्छा अगुआ किसी मण्डली में नहीं होगा; परन्तु, इन लोगों की अगुआई में भी लोगों की उपेक्षा हो रही थी। जब लोग दरारों में से गिरते हैं तो यह ज़रूरी नहीं है कि कलीसिया की अगुआई में ही दोष हो। अगुवे इन परिस्थितियों को कैसे *स भालते* हैं, इससे उनकी योग्यता का पता चल सकता है। परन्तु यदि ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो भी जाएं तो इसका कारण कमज़ोर अगुआई नहीं माना जाना चाहिए।

जब लोग दरारों में से गिर जाएं, तो ग भीर समस्याएं पैदा हो सकती हैं

आयत 1 से हमें एक और महत्वपूर्ण शिक्षा मिलती है: जब लोग दरारों में से गिरने लगते हैं, तो गज़ीर समस्याओं की सज़भावना एक वास्तविकता बन जाती है। NASB में ''एक *शिकायत* उठी'' है। ''शिकायत'' शब्द इतना शक्तिशाली नहीं है। शिकायत शब्द यह प्रभाव छोड़ता है कि यह परिस्थिति एक बार के लिए ही थी, या यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों ने प्राचीनों के पास ''शिकायत'' की (जैसा कि उनके द्वारा करना उचित था [मत्ती 18:15-17])। अनुवादित यूनानी शब्द ''कुड़कुड़ाने'' का अर्थ है ''बुड़बुड़ाना ..., असंतोष प्रकट करना ... अन्दर के रूठेपन और असंतोष को व्यक्त करते हुए, बड़बड़ करना।''[17] इस शब्द को पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में इस्राएलियों के जंगल में *बुड़बुड़ाने* के लिए इस्तेमाल किया गया है।[18] फिलिप्पियों 2:14 में इसका इस्तेमाल किया गया है: ''सब काम बिना *कुड़कुड़ाये* और बिना विवाद के किया करो।'' पुराने या नये नियम में इस शब्द का कभी सकारात्मक अर्थ नहीं लिया गया। इसका संकेत कलीसिया के लोगों में एक दूसरे के बारे में फुसफुसाहट, बुड़बुड़ाहट और शिकायत करने की ओर है। दूसरे शब्दों में, आरोपी के साथ सीधे बात करने के बजाय दूसरों से उसके बारे में बातें करना। यह अप्रसन्नता की धारा का वह अदृश्य हिस्सा है जो सदस्यों में असंतुष्टि की लहर बनकर बह सकता है और बढ़कर मण्डली को टुकड़ों में बांटकर फूट डाल सकता है!

यदि इस समस्या का समाधान न किया गया होता, तो तात्कालिक परिणाम भुगतने पड़ते। थोड़ी देर बाद यहूदी सदस्यों के साथ अन्यजातियों के आ मिलने पर कलीसिया को और भी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता था। यदि यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदी और फलस्तीनी यहूदी आपस में इकट्ठा रहना नहीं सीख पाते, तो यहूदियों और अन्यजातियों के इकट्ठे होने की आशा ही जाती रहती!

अपने जीवनकाल में, मैंने कई मण्डलियों को उनके सदस्यों के मनों में आई बातों के कारण टूटते हुए देखा है। अधिकतर घटनाओं के आरज़्भ में कोई भी समस्या बहुत बड़ी नहीं, बल्कि छोटी सी ही थी, जिससे निपटा जा सकता था। क्योंकि इससे निपटा नहीं गया, इसलिए यह बढ़ती गई और एक बहुत भयानक दरार बन गई।

जब लोग दरारों से गिरे तो प्रेरितों ने क्या किया (6:2, 3)

छोटी-छोटी समस्याओं से कैसे निपटा जाए ताकि वे बड़ी समस्याएं न बन पाएं? जब लोग दरारों में से गिरने लगें तो हमें क्या करना चाहिए? आइए 6:2, 3 में से कुछ महत्वपूर्ण सुझाव लें।

अच्छे अगुवे तुरन्त समस्याओं से भावुकता से निपट लेते हैं

अच्छे अगुवे समस्याओं का समाधान तुरन्त कर लेते हैं, ''तब उन बारहों[19] ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में रहें'' (आयत 2)। मैं नहीं जानता कि प्रेरितों को इस समस्या का पता कैसे चला। हो सकता है कि किसी ने आकर उनके पास शिकायत कर दी हो, परन्तु इसमें मुझे संदेह है। प्रेरितों को इस समस्या का पता कैसे भी चला हो, परन्तु जब उनके कानों में यह बात पड़ी, तो उन्होंने यह समझकर कि सब ठीक हो जाएगा, उसकी उपेक्षा नहीं की। वे इसके समाधान के लिए तुरन्त कुछ उपाय करने लगे। ऐसा करते हुए, उन्होंने बड़ी गम्भीरता दिखाई।

यदि मैं प्रेरितों में से एक होता तो मुझे अपनी भावनाओं से बड़ा ही संघर्ष करना पड़ता। पहले तो, मैं आलोचना को व्यक्तिगत रूप में लेता। वचन बताता है कि शिकायत देशीय ''यहूदियों'' के विरुद्ध थी; जबकि सच तो यह था कि यह शिकायत प्रेरितों के विरुद्ध थी, क्योंकि बांटने की ज़िम्मेदारी उनकी ही थी। मैं तो उन पर बरसने के लिए तैयार हो जाता: ''कितने अहसान फ़रामोश हो तुम! कौन सा नियम है जो यह कहता है कि हम तुम्हारी विधवाओं को *खिलाएं* ? हम उन्हें नहीं खिलाएंगे। हमने भला करना चाहा था परन्तु तुम लोग तो ऐसे कर रहे हो जैसे तुम्हारा कोई अधिकार छीन लिया गया हो! तुम्हें मालूम नहीं कि हम जितना कुछ कर सकते हैं, कर रहे हैं! इसके लिए तुम्हारे मुंह से ज़रा सी भी प्रशंसा और धन्यवाद की बात क्यों नहीं निकली?''

दूसरा यह कि, मुझे कुड़कुड़ करने वाले, शिकायत करने वाले, और दोष निकालने वाले लोग पसन्द *नहीं* हैं, चाहे उन्हें बुरा ही लगता! मैं तो खीझ कर कहता, ''शिकायत करने की कोई आवश्यकता नहीं, सुधार कर लो! तुम्हारे ख़्याल में यदि तुम इससे अच्छा काम कर सकते हो, तो फिर करो?'' थोड़े शब्दों में, किसी भी उत्तर को ''संवेदनशील'' नहीं कहा जा सकता था।

जब झगड़े की बात प्रेरितों के कानों में पड़ी, तो उन्होंने मण्डली को इकट्ठा करके उनको नीचा नहीं दिखाया और न ही बुड़बुड़ाने या शिकायत करने वालों को डांटा कि वे उनके पास क्यों नहीं आए। उन्होंने माना कि यह एक उचित समस्या है और उसके समाधान का सुझाव भी दिया। वे उस समस्या और उन सबके प्रति जो उससे परेशान थे, संवेदनशील थे।

अच्छे अगुवे मण्डली को भी शामिल करते हैं

जब लोग या वस्तुएं दरारों में से गिरते हैं, तो अच्छे अगुवे उसके हल के लिए मण्डली को शामिल करते हैं। हम पढ़ते हैं, ''तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली[20] को अपने पास बुलाकर कहा'' (आयत 2 क)। उन्होंने यह कैसे किया? क्या उन्होंने सभी बीस या तीस हज़ार लोगों को एक साथ बुलाया? क्या उन्होंने मण्डली के हर एक भाग के प्रतिनिधियों (जो परिवारों के मुखिया हो सकते हैं) को बुलाया? फिर वे इतने विशाल समूह में प्रत्येक के साथ *स प्रेषण* कैसे कर सके? मैं इसके विवरण के बारे में तो नहीं जानता, परन्तु मैं यह जानता हूं कि उन्होंने सारी मण्डली को साथ लिया।

उन्होंने मण्डली में *भरोसा* दिखाया। कुड़कुड़ाने वाले कह रहे थे, ''हमें अपने अगुओं पर भरोसा *नहीं,*'' परन्तु, वस्तुत: अगुओं ने कहा, ''हम आप पर भरोसा करते हैं। हम चाहते हैं कि *आप* इस महत्वपूर्ण काम को करने के लिए अपने में से कुछ पुरुषों को चुन लें'' (आयत 3क)।

नये नियम की अन्य आयतों में अगुओं की नियुक्ति के बारे में लिखा गया है (देखिए तीतुस 1:5; प्रेरितों 14:21-23), परन्तु केवल यही है जो संकेत देता है कि यह *कैसे* हुआ। कई लोग सोचते हैं कि अगुओं का चुनाव प्रचारक को करना चाहिए; अन्यों का विचार है कि यह चुनाव ऐल्डरों को करना चाहिए। यदि किसी समय चुनाव करने के योग्य अगुओं का कोई समूह हुआ है, तो यह आत्मा की अगुआई में चलने वाले प्रेरित ही होंगे। उन्होंने *मण्डली* से कहा, ''तुम ही चुनाव करो!''

जब मण्डली को किसी चुनौती का सामना करना पड़ता है, तो अच्छे अगुवे उसका हल ढूंढने के लिए सभी सदस्यों को शामिल करते हैं। यह सत्य है, विशेषकर जब अतिरिक्त अगुओं की आवश्यकता होती है!

अच्छे अगुवे ज़ि मेदारी बांट देते हैं

अच्छे अगुवे सभी बातों को स्वयं ही सज़्भालने की कोशिश नहीं करते। प्रेरितों ने कहा:

> यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में रहें। इसलिए, हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों[21] को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे (आयतें 2-4)।

रोमियों 12 और 1 कुरिन्थियों 12 यह स्पष्ट करते हैं कि सभी मसीहियों में समान योग्यताएं नहीं हैं। कोई तो आंख की तरह, कोई कान की तरह, और कोई मुंह की तरह, और अन्य हाथों व पांवों के रूप में काम करते हैं। कलीसिया में कोई किसी काम के लिए उपयुक्त होता है; तो दूसरा किसी अन्य काम के लिए। हमें अलग-अलग सेवाएं दी गई हैं। जब प्रेरितों ने ''वचन की *सेवा,*'' कहा तो उन्होंने उसी यूनानी शब्द का प्रयोग किया जिसका अनुवाद आयत एक में ''सेवकाई'' के लिए हुआ है।[22] और लोग *भोजन* की सेवकाई को

सज़्भाल सकते थे; प्रेरित *वचन* की सेवकाई के लिए ज़िज़्मेदार थे!

परमेश्वर ने प्रेरितों को उनका काम दे दिया था, उन्हें जी उठने के गवाह होना था और उस कार्य को पूरा करने के लिए उन्हें पवित्र आत्मा से सामर्थ मिली थी। यदि शैतान उनकी शक्तियों को खिलाने-पिलाने की सेवकाई की ओर मोड़ देता, तो उसे अवश्य ही बहुत बड़ी विजय प्राप्त हो जाती। थोड़ी सी आत्माओं का उद्धार होता अर्थात कलीसिया का आत्मिक विकास बिल्कुल ही रुक जाता। परन्तु, प्रेरितों ने अपने लिए परमेश्वर की योजना को समझा और अपने आप को उसके उद्देश्यों के लिए प्रतिबद्ध कर दिया था। उन्होंने कहा, ''ऐसे आदमी चुन लो जो इस कार्य को करने के योग्य हों, ताकि हम वह काम कर सकें जो परमेश्वर ने हमें करने के लिए सौंपा है!''

आज स्थानीय मण्डलियों में परमेश्वर द्वारा स्वीकृत *हमारे* अगुवे ऐल्डर्ज़, बिशप्ज़, अथवा पासबान हैं।[23] परमेश्वर ने इन लोगों के कार्यों को विस्तार से बता भी दिया है कि उन्हें झुंड के चरवाहे बनना है![24] परन्तु, उनके लिए चरवाही करना छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवकाई की ओर मुड़ना आसान है। जहां ऐसा होता है, समझो शैतान ने वहां विजय पा ली है, क्योंकि कलीसिया ऐसी हो गई है ''जिसका कोई चरवाहा न हो'' (मत्ती 9:36)। मण्डली के समस्त कार्य ऐल्डरों की निगरानी में होते हैं,[25] परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि वे सब कुछ अपने आप ही कर सकते हैं। यदि कोई काम किसी दूसरे के द्वारा हो सकता है, तो अगुओं को उसे करने देना चाहिए, स्वयं केवल उस काम की निगरानी ही करनी चाहिए। वह ज़िज़्मेदारी किसी और को नहीं दी जा सकती। यह इस बात का सार है कि ऐल्डरों या अध्यक्षों को क्या करना चाहिए![26]

सारांश

आध्यात्मिक तालिका में कुछ समय बिताएं। जहां आप आराधना करते हैं वह मण्डली कितनी मज़बूत है? आप उसमें क्या योगदान देते हैं? क्या आप उन दरारों को भरने के लिए अपनी योग्यता का इस्तेमाल कर रहे हैं या आपके कारण वे दरारें और बड़ी हो रही हैं? क्या यह भी सज़्भव है कि आप किसी समस्या के समाधान के लिए अपना योगदान देने के बजाय केवल बुड़बुड़ करने वाले या शिकायत करने वाले ही हों?

मन को जांचने पर, हो सकता है कि आप यह स्वीकार करें कि आप मण्डली के सक्रिय सदस्य नहीं हैं। यदि ऐसी बात है, तो आपको सक्रिय होना चाहिए, ''इसलिए नहीं कि संज़्या में एक और व्यक्ति की गिनती बढ़ जाए, बल्कि इसलिए कि एक और सक्रिय व्यक्ति गिनती में शामिल हो जाए।''[27]

हो सकता है कि आप यह भी मान लें कि आप कभी भी ''विश्वास के आज्ञाकारी'' नहीं रहे। इस प्रकार आपको प्रभु ने कज़ी भी अपनी कलीसिया में नहीं मिलाया,[28] और आप उसकी सेवा में उपयोगी नहीं हो सकते। यीशु पर अपने विश्वास का अंगीकार करने और उसमें बपतिस्मा लेने के लिए एक और दिन की प्रतीक्षा न करें!

प्रवचन नोट्स

यद्यपि इस पाठ में और अगले पाठ में अध्ययन का खण्ड छोटा है, परन्तु अच्छी अगुआई के विषय में गहराई से बताने के कारण यह विशेष आकर्षण का अधिकार रखता है। मैं कई बार अगुओं के चुनाव की तैयारी के एक भाग के रूप में इन दो पाठों का इस्तेमाल करता हूं। प्रेरितों ने प्रेरितों 6 अध्याय के संकट को हल करते हुए अच्छी अगुआई के सिद्धांतों का प्रदर्शन किया। उन्होंने सात पुरुषों का चुनाव करने के लिए मण्डली को साथ लिया, और योग्यताएं बताकर, चुने हुओं के लिए प्रार्थना करके, और उन पर हाथ रखकर उन्हें अगुआई प्रदान की।

पादटिप्पणियां

[1]''दरारों में से गिरना'' सांकेतिक भाषा है जिसका अर्थ है ''अनदेखी होना।'' यदि यह वाक्यांश जटिल है या समझ से परे है, तो इसके स्थान पर दूसरे शब्द का इस्तेमाल कर लें। अधिकांश लोग इसकी थोड़ी सी व्याज्या से इसे समझ लेंगे। [2]यदि उपयुक्त हो, तो आप उस व्यक्ति का उदाहरण दे सकते हैं जो हाल ही में कलीसिया में ''दरारों में से गिरा हो।'' [3]कई तो इसकी गिनती बताते हुए 1,00,000 तक पहुंच जाते हैं। संज्या महत्वपूर्ण नहीं है। इसका उल्लेख केवल इसलिए किया गया है कि समस्या के समाधान के लिए *पूरी कलीसिया* को साथ लिया गया। [4]शब्दावली में देखिए ''चेला।'' [5]यह आकर्षक बात है जिसे चाहें तो बढ़ा भी सकते हैं। बहुत से मार्शल आर्ट्स में, विरोधी की शक्ति उसके विरुद्ध इस्तेमाल की जाती है। यदि हमें लगता है कि हम कुछ निश्चित बातों में आत्मिक रूप से स्थिर हैं, तो इससे हमें परमेश्वर के बजाय स्वयं पर अतिविश्वास और भरोसा हो सकता है। [6]इनमें से कुछ वे विधवाएं हो सकती हैं जो पिन्तेकुस्त के पर्व के लिए बहुत दूर से आईं और परिवर्तित हुई थीं (अध्याय 2); उनके पति बीच के वर्षों में मर गए होंगे। परन्तु, इनमें अधिक प्रतिशत, उन यहूदी स्त्रियों का रहा होगा जो फलस्तीन के अन्य भागों या संसार के अन्य भागों से (विधवाएं होने से पहले या बाद में) सार्वजनिक जीवन से अवकाश ग्रहण करने के लिए यरूशलेम आई थीं। हर एक समर्पित यहूदी का यह सपना होता था कि वह अपना शेष जीवन पवित्र नगर, यरूशलेम में बिताए। [7]दान उनके पैरों में रख दिए जाते थे (4:35, 37; 5:2) और प्रेरितों ने संकेत दिया कि यदि उस काम को करने के लिए पुरुषों का चुनाव नहीं होता, तो वह उन्हें ही करना पड़ता (6:2-4)। [8]शायद प्रेरितों 5:6, 10 वाले ''जवान'' सहायता करते। [9]ये यहूदी सताव या आर्थिक विवशता के कारण तितर-बितर हो गए थे। [10]सिकन्दर महान की विजयों के कारण, कोयनि (साधारण) यूनानी पूरे सज्य जगत में बोली जाती थी। इसका अर्थ यह नहीं था कि ये यहूदी किसी भी प्रकार अरामी भाषा को समझते ही नहीं थे; इसका सरल अर्थ यह है कि उनकी *मु य* भाषा यूनानी थी।

[11]यूनानी भाषा बोलने वाले अनेक यहूदी अपने आप को बौद्धिक तथा सांस्कृतिक रूप से फलस्तीन के यहूदियों से उत्तम समझते थे। [12]इसका अर्थ यह नहीं कि यहूदी लोग यूनानी भाषा नहीं समझते थे; इसका अर्थ यह है कि वे प्रतिदिन की भाषा में अरामी भाषा का इस्तेमाल करते थे। [13]इसका अर्थ यह नहीं कि यूनानी भाषा बोलने वाले ''अच्छे यहूदी'' नहीं थे। बल्कि वे यरूशलेम में त्यौहार मनाने के लिए दूर-दूर के इलाकों से आए थे और यह कि बहुत से लोग व्यवस्था के प्रति अपने समर्पण की गवाही देने के लिए यरूशलेम में रह रहे थे। उन्हें तुच्छ समझा जाता था क्योंकि उन्होंने मनुष्यों की बनाई हुई धार्मिक रीतियों और प्रथाओं को त्याग दिया था। [14]यरूशलेम की कलीसिया में यूनानी भाषा बोलने वाले बहुत से

यहूदी जो परिवर्तित हो चुके थे और यरूशलेम में रह गए थे, सम्भवत: वहां पिन्तेकुस्त के पर्व के लिए आए थे (प्रेरितों 2)। [15]प्रेरितों 6:9 संकेत देता है कि यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों का यरूशलेम में अलग प्रार्थना-भवन था। दोनों प्रकार के यहूदी स्पष्टत: एक दूसरे से दूरी बनाए रखते थे। [16]कलीसिया में पहली बड़ी मुश्किल शिक्षा से सम्बन्धित नहीं, बल्कि व्यावहारिक थी। कुछ कलीसियाएं शिक्षा की मुश्किलों के कारण टूट गई थीं; परन्तु अन्य अधिक व्यावहारिक मुश्किलों के कारण टूटीं। किसी भी समस्या की उपेक्षा नहीं की जा सकती। [17]द *अनालिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंडन, सैमुएल बैग्स्टर एण्ड सन्स, 1971), 81 [18]निर्गमन 15:24; 16:2, 8; 17:3; गिनती 14:2, 27, 29, 36; 16:41; व्यवस्थाविवरण 1:27. [19]''बारहों'' प्रेरितों को सम्बोधित करने का तकनीकी ढंग था। शाऊल/पौलुस अभी परिवर्तित नहीं हुआ था; यह प्रमाणित करता है कि मत्तिय्याह को यहूदा के स्थान पर परमेश्वर की ओर से नियुक्त होने की पहचान मिल गई *थी* (''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में प्रेरितों 1:23, 26 पर नोट्स देखिए)। [20]मूलत:, अनुवादित शब्द ''मण्डली'' का अर्थ है ''जनसमूह।'' ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में 4:32 में ''मण्डली'' पर नोट्स देखिए। 6:2 में ''मण्डली'' के लिए यूनानी शब्द उसी मूल से है जैसे कि 6:1 में क्रिया ''बढ़ना'' है। प्रेरितों ने ''बढ़े हुए समूह'' को इकट्ठा किया।

[21]प्रेरितों ने *सात* ही को क्यों कहा? बहुत से अनुमान लगाए गए हैं (''7'' एक सम्पूर्ण अंक है, यहूदियों की समितियां सात लोगों की होती थीं, आदि), परन्तु हमें नहीं मालूम। हो सकता है कि नगर (या ज़रूरतमंदों के घर) प्राकृतिक रूप से सात भागों में बंटे हों, और प्रत्येक की ज़िम्मेदारी एक व्यक्ति को दिए जाने की आवश्यकता हो। इसका बेहतर उत्तर यह है कि *उस कार्य को करने के लिए सात लोगों की आवश्यकता थी।* यदि कोई काम करने के लिए न हो तो किसी व्यक्ति की नियुक्ति नहीं की जानी चाहिए। कार्य को करने के लिए गिने चुने लोग होने चाहिए, उससे अधिक का चयन नहीं होना चाहिए। [22]हिन्दी की पुराने अनुवाद वाली बाइबल में यहां पहली आयत में सेवकाई और 4 आयत में सेवा है। [23]बाद के एक भाग में प्रेरितों 20:28 पर नोट्स देखिए। [24]पुन:, प्रेरितों 20:28 पर नोट्स का सुझाव लें। [25]कालान्तर में कई लोगों ने प्रेरितों 6:1-7 का प्रयोग यह सिखाने के लिए किया है कि ऐल्डर्ज़ आत्मिक बातों में निगरानी के लिए हैं। जबकि डीकन्ज़ शारीरिक बातों की निगरानी के लिए। परन्तु, केवल ऐल्डरों को ही ''बिशप'' अथवा ''निगरान'' कहा गया है (पुन: प्रेरितों 20:28 पर नोट्स देखिए); शब्द ''डीकन'' का सरल अर्थ है ''सेवक।'' ऐल्डरों को बहुत सी भौतिक आवश्यकताओं में योग्य सहायकों (डीकनों) की आवश्यकता होती है ताकि वे अपने चरवाही के आत्मिक काम पर ध्यान लगा सकें, परन्तु उन्हें सब की निगरानी रखनी होती है (इब्रानियों 13:17)। [26]यह प्रासंगिकता प्रचारकों के लिए भी हो सकती है। आमतौर पर प्रचारकों को इतने काम करने के लिए दिए जाते हैं कि वे ''स्वयं को वचन तथा प्रार्थना में समर्पित'' नहीं कर पाते। [27]ये विचार सनसेट चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, लब्बॉक, टैक्सास में प्रचार किए रिचर्ड रोजर्स के प्रवचन से नकल किए गए हैं। [28]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में प्रेरितों 2:47 पर नोट्स देखिए।